# HINDI LITERATURE

## Second Paper (उपन्यास एवं कहानी)

Time Allowed : Three Hours | Maximum Marks : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये: 10×3

(क) कुत्ते की देह से जाने कैसे दुर्गन्ध आ रही थी; पर वह उसे अपनी गोद से चिपटाये हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहाँ है; और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गन्ध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गल लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा तक पहुँचा दिया। नहीं इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिये थे और उसका एक–एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

अथवा

मनुष्य का हृदय बड़ा ममत्व प्रेमी है। कैसी ही उपयोगी और कितनी ही सुन्दर वस्तु क्यों न हो, जब तक मनुष्य उसको पराई समझता है, तब तक उससे प्रेम नहीं करता। किन्तु भद्दी से भद्दी और काम न आने वाली वस्तु को भी यदि मनुष्य अपनी समझता है, तो उससे प्रेम करता है। पराई वस्तु कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो, कितनी ही उपयोगी क्यों न हो, कितनी ही सुन्दर क्यों न हो, कितनी ही उपयोगी क्यों न हो, कितनी ही सुन्दर क्यों न हो, उसके नष्ट होने पर मनुष्य कुछ भी दुःख का अनुभव नहीं करता, इसलिए कि वह वस्तु उसकी नहीं पराई है। अपनी वस्तु कितनी भी भद्दी हो, काम में न आने वाली हो, उसके नष्ट होने पर मनुष्य को दुःख होता है, इसलिए कि वह अपनी चीज है।

(ख) इस दुनिया के हर कोने पर मर्द खड़ा मिलेगा, कभी प्रेमी के रूप में तो कभी बलात्कारी के रूप में। मगर जो पति ढूँढ़ने निकलो तो एक भी कायदे का आदमी नजर नहीं आएगा, जिसके साथ उम्र एक छत के नीचे गुजार दी जाये। मैं तो यूँ ही

http://questionpaperesult.com

Scanned by CamScanner

भली। न कोई मेरा ठौर–ठिकाना, न मैं किसी घर की मालकिन। दुनिया की आबादी हूँ और हालात की शहजादी हूँ। इन मर्दों को अब कौन समझाए।

अथवा

तमाम सड़कें हैं, जिन पर वह जा सकता है..... लेकिन वे सड़के कहीं नहीं पहुँचती हैं। इन सड़कों के किनारे घर हैं, बस्तियाँ हैं, पर किसी भी घर में वह नहीं जा सकता। उन घरों के बाहर फाटक हैं, जिन पर कुत्तों से सावधान रहने की चेतावनी है, फूल तोड़ने की मनाही है और घण्टी बजाकर इन्तजार करने की मजबूरी है।

(ग) नारी चाहे कितनी ही कम उम्र की हों, पुरूषों को समझने में दक्ष होती हैं। अपनी प्रकृति–प्रदत्त परख की शक्ति के बल पर वे पुरूष की नस–नस पहचान जाती हैं। एक पुरूष के साथ रहता उसका साथी जो काम वर्षों में नहीं कर पाता, एक स्त्री चन्द दिनों में ही कर लेती है। इसीलिए तो सेवा का काम स्त्रियों के जिम्मे ही दिया जाता है। शालिनी और दद्दाजी में दुगुनी उम्र का फासला था। फिर भी कभी–कभी दद्दाजी शालिनी को बड़े निरीह, भोले–भाले दिखते थे।

अथवा

सारा परिवेश दर्द में सन गया था। मैंने खुद पर नियंत्रण किया। आंसू पोंछ दद्दाजी के लिए कृतज्ञता भरकर आँखें उठाईं। वह उठी तो उठी रह गयीं, विस्मृत हो गयीं, और पता नहीं दद्दाजी उसमें क्या ढूँढ़ते रहे? इतना अवश्य हुआ कि उन्हें वहाँ वही सागर–रत्न मिल गया, जिसके लिए उन्होंने गहरे समुद्र में गोते लगाये थे। तभी तो अपननी उपलब्धि की गौरव–रेखा खिंच आई उनके चेहरे पर! वे मेरी पीठ थपथपा, बड़ी तत्परता से डॉक्टर से बोले, "रूक क्यों गए? लगाओ न!"

2. कहानी–कला के तत्त्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिये। 15

अथवा

" 'एक गौ' कहानी में गाय की मुखरित वाणी वर्तमान युग की यांत्रिक सभ्यता की निर्ममता, अर्थ प्रमुखता और कठोरता पर तीखा व्यंग्य है।" इस कथन की सत्यता 'एक गौ' से उदाहरण देते हुए प्रमाणित कीजिये।

3. "जयशंकर प्रसाद की 'पुरस्कार' कहानी में लेखक ने प्रेम और कर्त्तव्य का आन्तरिक संघर्ष दिखा कर बड़े कौशल से उन दोनों की रक्षा की है।" इस कथन की सत्यता उक्त कहानी से उदाहरण देते हुए प्रमाणित कीजिये। 15

अथवा

'खोई हुई दिशाएँ' कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट करते हुए बताइये कि इसमें महानगरीय जीवन की स्थितियों का चित्रण करने में कहानीकार कहाँ तक सफल रहा है? 15

4. उपन्यास के तत्वों के आधार पर 'ज्यों मेंहदी को रंग' उपन्यास की सोदाहरण समीक्षा कीजिये। 15

अथवा

" 'ज्यों मेंहदी को रंग' उपन्यास में दद्दाजी का आदर्श चरित्र मानवीय व्यक्तित्व से

http://questionpaperesult.com

Scanned by CamScanner

असाधारण दिखाई देता है।" इस कथन के आलोक में दद्दाजी का चरित्र–चित्रण कीजिये। 15

5. हिन्दी उपन्यास साहित्य के उद्भव और विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिये। 13

अथवा

कहानी के प्रमुख तत्त्वों का उल्लेख करते हुए सिद्ध कीजिये कि तात्विक दृष्टि से उपन्यास एवं कहानी पूर्णतः भिन्न विधाएँ हैं। 13

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिये: 6+6

(i) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी

(ii) कहानी की प्रमुख शैलियाँ

(iii) कथाकार मुंशी प्रेमचन्द

(iv) हिन्दी के प्रमुख मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार

(v) जयशंकर प्रसाद की कहानी कला।

http://questionpaperesult.com

Scanned by CamScanner